लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

website: www.pawanprawah.com

पवन प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह

डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17

वर्ष 03 अंक 44 लखनऊ। सोमवार 24 से 30 जुलाई-2017

e-mail-pawanprawah@gmail.com

मूल्य : तीन रूपये पृष्ठ-16

आइसबर्ग के दक्षिणी ध्रुव से टूटने का सम्भावित खतरा!

॥ प्रो. भरत राज सिंह ॥

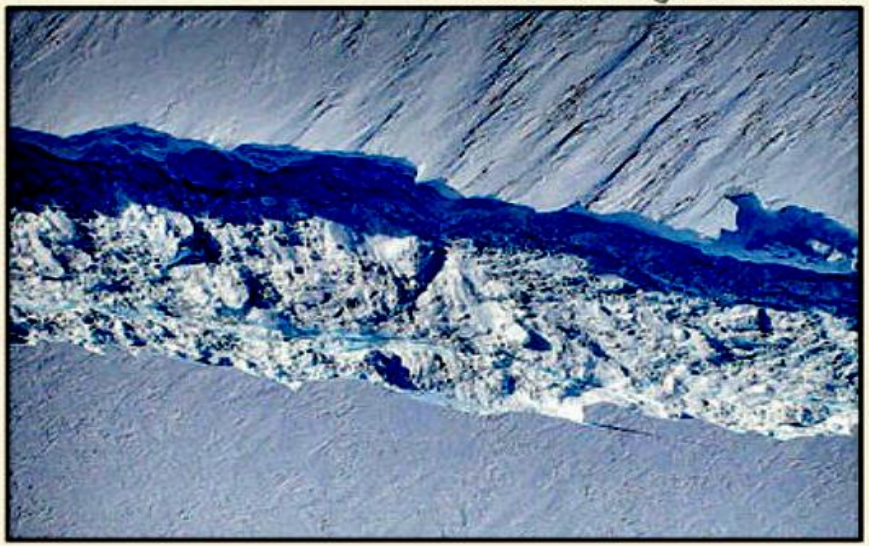

अभी दिनांक 10-12 जुलाई 2017 के बीच दक्षिणी ध्रुव के पश्चिमी छोर से एक आइसबर्ग जिसका क्षेत्रफल 5800 वर्ग-किलोमीटर था और अनुमानित मोटाई 350 मीटर है, टूटकर अलग होगया है। इस आइसबर्ग का वजन 1-खरब टन तथा इसकी अलग होकर समुद्र में चलने की रफ्तार लगभग 325 किलोमीटर प्रति घंटे की आंकी गयी है। इससे यह भी अनुमान लगाया जा रहा है कि यदि इस चट्टान की बर्फ पूर्णतः पिघल जाएगी तो समुद्र के जल-स्तर में लगभग 10 इंच की बढ़ोत्तरी हो जाएगी। यह भी अनुमान लगाया जा रहा है कि इससे समुद्री जहाजों के रास्ते में टकराने का भी बहुत बड़ा खतरा बना हुआ है और छोटे द्वीपों के डूबने से भी इंकार नहीं किया जा सकता है। इसका क्षेत्रफल, भारतवर्ष के गोआ से डेढ़ गुना, दिल्ली शहर से 4 गुना और अमेरिका के न्यूयॉर्क से 7-गुना के बराबर है।

प्रो. भरत राज सिंह जो स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ के महानिदेशक (तकनीकी) है, का कहना है कि इस टूटे आइसबर्ग के किसी अन्य द्वीप के साथ टक्कर होने पर एक तरफ जहां उसके जलप्लावन से डूबने का खतरा है वही दूसरी तरफ उस द्वीप के सभी जीव-जंतुओं, पेड़-पौधे और विकास की सभी सुविधाओं के समाप्त होने से भी नाकारा नहीं जा सकता है। यह प्रक्रिया इतनी भयावह हो सकती है कि इसके बारे में सोचना मुस्किल है।

प्रो. सिंह यह भी बताते हैं कि इस आधुनिक युग में, जब हम सभी चीजों को अपनी खोज से पूर्वानुमान लगा लेते हैं, तब भी विश्व के सभी जनमानस को कुछ विकसित देश और कुछ विकासशील देश क्यों गुमराह कर रहे हैं। किसी को अब यह जानकारी नहीं है कि विगत एक या डेढ़ शताब्दी में पृथ्वी पर हुयी अप्रत्यासित जनसँख्या वृद्धि व आसामान्य विकास की दरे इसके मुख्य कारक हैं जो पृथ्वी से खनिजों, तेल भण्डार और कोयले का अनाप-सनाप दोहन से उत्पन्न किया गया। प्रकृति से भी तरह-तरह से छेड़छाड़ की गयी जिसमें पेड़ों व जंगलों की कटान, वाहनों के अप्रत्यासित उपयोग और इंडस्ट्रीज का अंधाधुन्द बढ़ावा आदि ही वैश्विक तामपान के वृद्धि में मुख्यकारक पाए गए हैं।

प्रो. सिंह ने बताया कि उक्त घटना की पूर्व में ही, उनके द्वारा उनकी किताब ग्लोबल

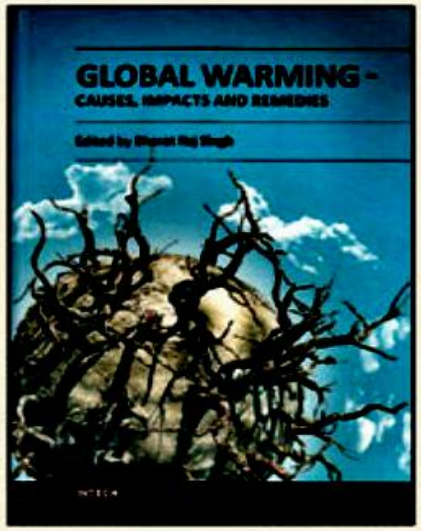

वार्मिंग कॉजेज, इम्पैक्ट एंड रेमेडीज, जो क्रोशिया में अप्रैल 2015 में प्रकाशित हुयी है, में इस बात का उल्लेख किया गया था कि अंटार्तिका (दक्षिणी ध्रुव) के पाईन-आइसबर्ग के पश्चिमी क्षेत्र से एक विशाल दरार नासा के सेट-लाइट के चित्र से देखि गयी है। इस पर नासा के वैज्ञानिकों का मत था कि इस प्रकार की दरारे बर्फ के पुनर्जमाव से भर जाती हैं।

परन्तु प्रो. सिंह ने, प्रो. रिग्नोट के बात का समर्थन करते हुए उल्लेख किया था कि बर्फ के वर्तमान गलने की दर को देखते हुए कुछ वर्षों या मात्र सौ वर्षों के अंतराल में ऐसे स्थानों के ग्लेशियर, इतिहास में कहानी का भाग बन जाएंगे। हम इस समय ऐसी स्थिति से गुजर चुके हैं जिसे अपने पूर्व स्थान पर पुनः वापस पहुंचाना असम्भव है। अतः इस स्थान की ग्लेशियर जहा दरारे पड़ चुकी हैं, का टूटना निश्चित है। जो घटना मात्र दो-वर्षों के अन्तराल पर घटित हो गयी और विश्व के किसी स्थान व समय में, किसी भयावह अथवा बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकती है।

देखे प्रो. सिंह के किताब के पृष्ठ 17 का अंश

Prof. Rignot has again and again expressed his concern over the retreating of the glaciers of

the West Antarctica in pointing out: "At current melt rates; these glaciers will be history within a few hundred years. We've passed the point of no return." So, the collapse of this sector appears inevitable.